पतली कमर और

तिरछी नजर का जादू

कुक्कू

कुक्कू मोरे

जन्म – 1928
मृत्यु – 30 सितंबर, 1981

तीस के दशक में नृत्यांगना अजूरी ने परदे पर धमाल किया था उनकी परम्परा को आगे बढ़ाते हुए कुक्कू ने चालीस तथा पचास के दशक में अपना जलवा बरकरार रखा। बाद में हेलन ने बाजी जीत ली।

आजकल फिल्मों में फड़कते आइटम साँग-डांस नम्बर डालकर मसालेदार और उत्तेजक बनाया जाता है। ऐसा ही तड़का पच्चास के दशक में डांसर कुक्कू लगाती थीं। दक्षिण-भारत के विख्यात डांसर प्रभुदेवा जब फिल्मों में अपने नृत्य के झटके दिखाने लगे, तो लोगों ने अतिरंजना के साथ कहा कि उनके शरीर में हड्डियाँ है ही नहीं । इसी तरह कुक्कू के तत्कालीन दर्शक भी उनकी पतली कमर को देखकर आश्चर्य प्रकट करते थे। लोग आपस में पूछा करते थे कि उनकी कमर है भी या नहीं?

सामान्य नाक-नक्श वाली यह आंग्ल-भारतीय कन्या छड़ी के समान दुबली-पतली किन्तु लचकदार थी। उसके नाच से दर्शकों में उन्माद पैदा हो जाया करता था। उसके परदे पर उभरते ही सिनेमाघरों में तूफानी हलचल मच जाती, लोग किलकारियाँ भरते, सीटियाँ बजाने लगते और कुछ मनचले तो सीट से उछलकर नाचने लगते। कुक्कू को हिन्दी-सिनेमा की ऐसी पहली नर्तकी होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, जिसके नाच पर रसिकों ने सिक्के उछालकर परदे पर फेंके।

कुक्कू की छरहरी देह पर टाइट ब्लाउज और बड़े घेरवाला कलीदार घाघरा होता। ईला अरूण और अन्य नर्तकियों, अभिनेत्रियों के घाघरों और माधुरी दीक्षित की चोली की धूम से बहुत पहले कुक्कू ने ही दर्शकों की दबी-छुपी कुण्ठा को सहलाया था। किसी नशीली धुन पर चंचल आँखों को मटकाकर, जुल्फ़ें लहराकर, हाथ घुमाकर नाचते-नाचते वे गोल-गोल घुमने लगती तो उनका घाघरा पूरे परदे को घेर लेता। अक्सर उनकी लम्बी चोटी भी इधर-उधर बलखाती नजर आती। श्वेत-श्याम फिल्मों के उस युग में शादी, सगाई, जन्मदिन और होटल क्लब की पार्टियों में कुक्कू का बोलबाला रहता। फिल्मों में उनकी डांस रखने के लिए वितरक निर्माताओं पर दबाव डालते थे।

ऐंग्लो-इंडियन होने के कारण उनकी हिन्दी बहुत कमजोर थी, इसलिए उन्हें नायिका और सहनायिका के रोल नहीं मिल पाए। उन्होंने अपना करियर बॉम्बे-टॉकिज की एक फिल्म में बाल-कलाकार की हैसियत से शुरू किया था। फिल्म 'सोना-चाँदी' में वे अभिनेता सुरेश की नायिका बनीं। मेहबूब ने फिल्म 'अंदाज' में उन्हें लम्बी भूमिका दी। इससे कुछ ही पहले वे राजकपूर की फिल्म 'बरसात' में 'पतली कमर है तिरछी नजर है' गाने पर नृत्याभिनय कर चुकी थीं। फिल्म 'एक थी लड़की' में कुक्कू के लिए गायिका शमशाद बेगम

ने एक नटखट गीत गाया था - 'दिल्ली से आया टिंगू' सुनील दत्त की फिल्म 'मुझे जीने दो' में कुक्कू ने नर्तकी मधुमती के साथ मादक युगल-नृत्य किया था।

'यहूदी' में उन्होंने हेलन के साथ नृत्य किया, जिसने अपनी सुंदरता और योग्यता के बल पर उनसे प्रमुख नृत्यांगना का ताज छीन लिया। इसके बाद उनके बुरे दौर की शुरूआत हो गई। अपने बहार के दिनों में कुक्कू के पास मुंबई के खार इलाके में आलीशान बंगला था। तीन मोटर गाड़ियां थी, एक खुद के लिए, दूसरी दोस्तों के लिए और तीसरी उसके कुत्तों को घुमाने के लिए। इस बंगले के बाहरी दीवारों पर बनी अलमारियों के शो-केस में उनके सैकड़ो जोड़ी जूते, चप्पल, सैंडिल सजे होते। वे हमेशा पोशाक से मैच करने वाले फुटवियर पहनतीं। कुक्कू शौहरत की बुलंदियों पे थी, उनके पास धन-दौलत, इज्जत, शौहरत सब कुछ था। कुक्कू बहुत दोस्त नवाज़ थी। उसके घर पर दोस्तों का तांता लगा रहता, उनके लिए दावतें होती, बड़े बड़े फाइव स्टार हॉटल्स से खूब सारा खाना मंगवाया जाता, जो बचता उसे फैंक दिया जाता। उसे खूब रिश्ते निभाए।

बहुत ही नाज-नखरों वाली कुक्कू ने अपने अंतिम दिन कैंसर की बीमारी से जूझते हुए गुजारे और वे कब गुमनामी के अंधेरे में गायब हो गईं, लोगों को पता ही न चला। उसके आखिरी दिन भयंकर मुफ़लिसी में बीते। सब्जी वाले जो खराब सब्जी फैंक देते थे, उसे वह उठा लाती और पकाकर खाती। उसकी मौत पर तबस्सुम ने यह शेर पढ़ा...

लाश उसकी मांगती रही कंधा,
उम्र जिसकी कटी रिश्ते निभाने में।